नील के दाता

कलकत्ता के हावड़ा स्टेशन पर घुटनों तक धोती पहने मुस्कराते हुए एक आदमी गांधी जी का स्वागत करने पहुँचा। जेसै ही गांधी जी उसके करीब पहुँचे उसने जल्दी से अपना परिचय दिया, "जी, मैं राजकुमार शुक्ल।" गांधी जी ने उन्हें एक नज़र देखा और बोले, "जाना ही होगा चम्पारण?"

"अंग्रेज़ों का ज़ुल्म बहुत बढ़ गया है और चम्पारण के लोगों को बस आपका सहारा है," राजकुमार जी बड़ी विनम्रता से बोले लेकिन उनकी बातों में दृढ़ विश्वास था। गांधी जी ना नहीं कर सके और चल पड़े चम्पारण नील की खेती के विरोध में 'अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लड़ने।'

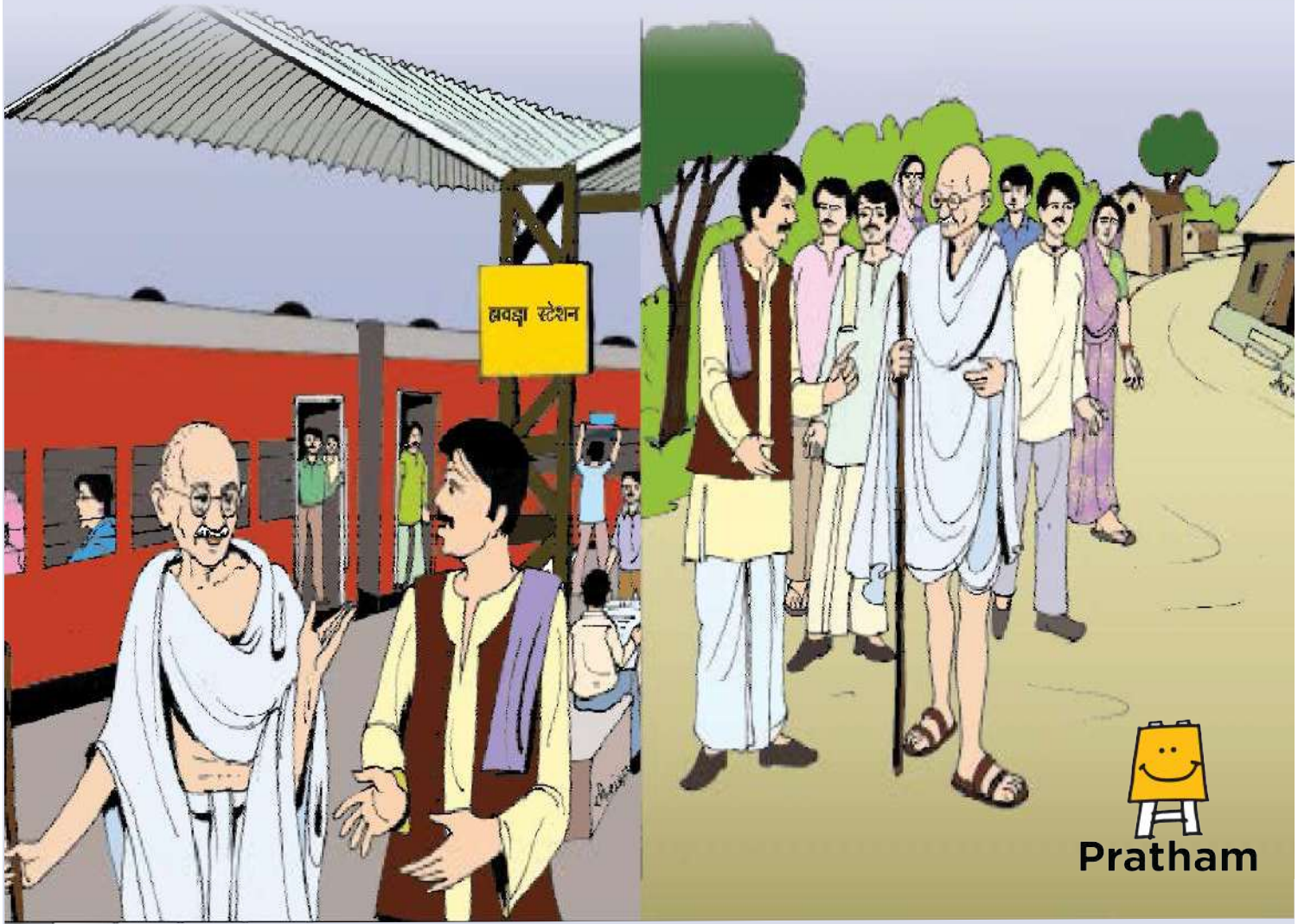

चम्पारण वासियों को 'तीन कठिया' नियम के तहत हर एक बीघा ज़मीन में नील की खेती करना ज़रुरी था। नील की खेती से ज़मीन बंजर होती जा रही थी और मुआवज़ा घटता जा रहा था। अंग्रेज़ मालामाल हो रहे थे और किसान बेहाल। इनकार करने पर कोड़े खाने को मिलते सो अलग।

1917 में गांधी जी चम्पारण के 'भीतिहरण आश्रम' आए और सत्याग्रह आँदोलन से चम्पारण के किसानों को अंग्रेज़ों से आज़ादी दिलाई।

इस आंदोलन में 'सत्वारिया गाँव' के छोटे किसान राजकुमार शुक्ल के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। अगर वह गांधी जी के पीछे नहीं पड़ते और उन्हें चम्पारण आने पर मजबूर नहीं करते तो शायद आज देश का इतिहास कुछ और ही बयान कर रहा होता।

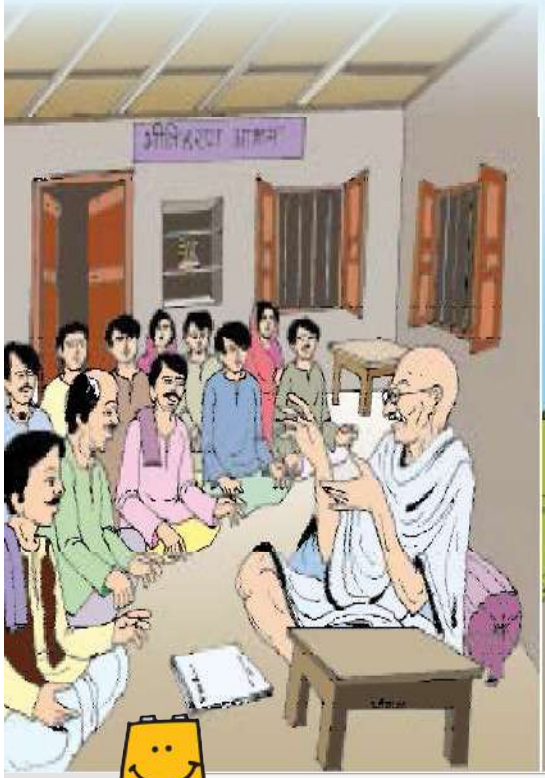

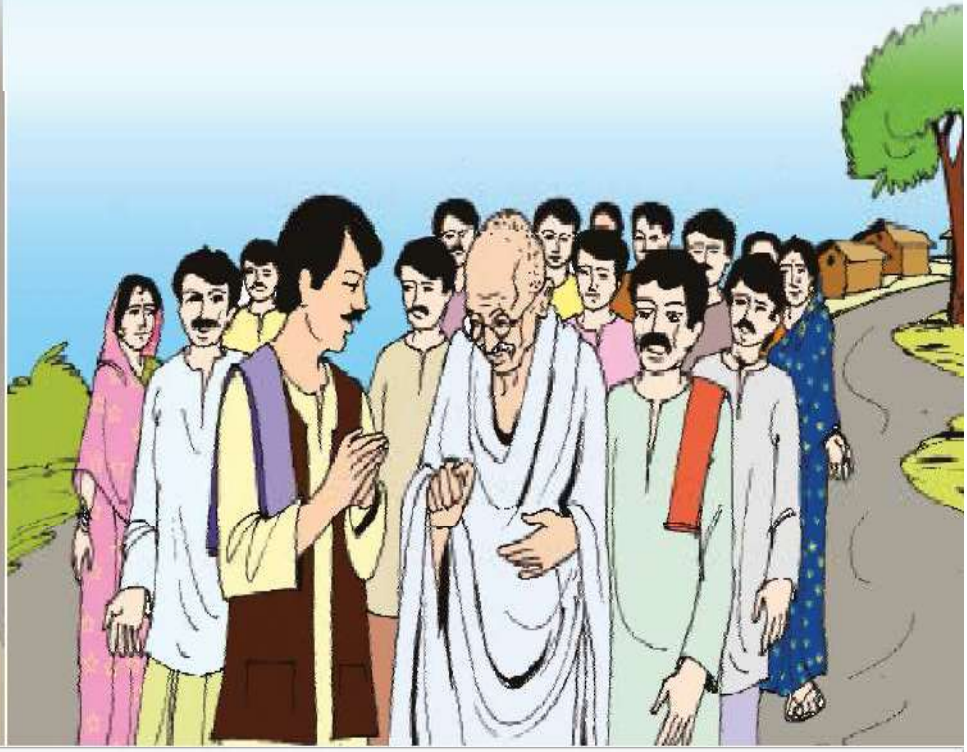

Pratham

Written by: Purnima Bala Srivastaw, Photographs by: Ravishankar

सो जा टिंकू

ख़ूबसूरत चाँदनी रात थी। सारे पशु सो रहे थे। सिर्फ़ टिंकू जागा हुआ था। "मुझे नींद नहीं आ रही अम्मा!" टिंकू फुसफुसाया। अम्मा ने उसकी बात सुनी नहीं। वह गहरी नींद में थीं। वह दाएँ मुड़ा फिर बाएँ मुड़ा। वह पेट के बल लेटा, फिर चित हुआ। इधर-उधर करवट बदली। पर वह सो ही नहीं पाया! वह उठा और निकल पड़ा।

वह जानना चाहता था कि रात में उसे कौन मिल सकता है। ऊपर आसमान में टिंकू ने चाँद देखा। सफ़ेद, जगमग करता गोल चाँद मुस्करा रहा था। दूर पेड़ पर, पत्तों के बीच टिमटिमाती रोशनी दिखी। "वह रोशनी कैसी?" वह चकित हुआ। एक छोटी-सी रोशनी उड़ती हुई उसके पास आई। "मैं एक जुगनू हूँ," जुगनू ने कहा। "मैं अँधेरे में चमकता हूँ!"

"क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे?" टिंकू ने पूछा। "हाँ बनूँगा," जुगनू बोला। एक पंछी उड़ता हुआ आया। पेड़ की शाख़ पर उल्टा लटक गया। "तुम कौन हो

भाई?" टिंकू ने पूछा। "मैं चमगादड़ हूँ।" उसने कहा। "मैं रात के अँधेरे में देख सकता हूँ!" "क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे? टिंकू ने पूछा। "हाँ, बनूँगा!" चमगादड़ बोला। एक पेड़ से दो चमकती आँखें उसे घूर रही थीं। "तुम कौन हो?" टिंकू ने पूछा। "मैं उल्लू हूँ।" जवाब आया। "मैं रात को अपने भोजन की तलाश में निकलता हूँ।"

"क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे?" टिंकू ने पूछा। "हाँ, ज़रूर बनूँगा!" उल्लू बोला। टिंकू और उसके दोस्त हँसे और उछले-कूदे। वे इधर से उधर लुढ़के, जब तक कि टिंकू को उबासी न आने लगी। हाँ! वह बहुत थक गया है। "मुझे नींद आ रही है, अब घर जाना है," टिंकू बोला। वह घर लौटते समय बहुत ख़ुश था कि उसने आज बहुत से नए दोस्त बनाए थे।

Pratham

Translated by Arti Smit
Original story Goodnight, Tinku! by Preethi Nambiar
Illustrated by Sonal Goyal and Sumit Sakhuja